Fading Margins...

Issue : 6 December 2011

About ARAVALI

ARAVALI (Association for Rural Advancement through Voluntary Action and Local Involvement), is an autonomous organization initiated by the Government of Rajasthan. We believe that the benefits of growth and development should reach to all sections of the society, and especially to the poorest and the most marginalized people. Over the past two years, we have evolved new strategies and taken initiatives with our partner NGOs to not only put in place various processes and systems to help the poorest and most vulnerable sections of the society, but also to question the initiatives which are against the interests of these people. Family Livelihood Resource Centre (FLRC) is both an institutional as well as a programming innovation in this direction. The FLRC is an innovative approach to dynamically and systematically analyse livelihood issues of the identified families as well as build tools and skills amongst functionaries to address the emerging challenges with the aim of enabling the most vulnerable to come out of the poverty trap through sustainable measures.

The livelihood profile series titled 'Fading Margins...' is part of a series of attempts from us to draw attention of the state government and other development stakeholders towards the lives of the poorest of the poor in the state and make development and growth, inclusive and resonating with the rhythm of life of the poorest.

ARAVALI
Patel Bhawan
HCM-RIPA (OTS)
Jawahar Lal Nehru Marg
Jaipur- 302017
Telefax: 0141-2701941
2710566

Email :
aravali-rj@nic.in

Website :
www.aravali.org.in

The Family*

Two years ago, an accident changed her life. She suffers every day. However, it was not she but her husband who was the victim in a road accident. Meet 46-year-old Geeta Kumari, a resident of Chapda village under Zayal Block in Nagaur district. After the accident, the responsibility to earn the bread and butter for the family has fallen on her shoulders. Geeta Kumari now lives with her physically as well as mentally weak (due to the road accident) husband Hariram, two sons- 27-year-old Sunil and 17-year-old Anil and Sunil's wife.

She continues to fight on many fronts. Geeta Kumari was suffering from Asthma earlier and two years ago, doctors diagnosed a hole in her heart. She got the medical investigations done at the district hospital and also took medicines. However, finding no improvement in her health, and the medicines too costly, she stopped the treatment. Instead, she started visiting the village temple hoping for some miracle and religious cure. This further worsened her condition, limiting her to the bed. Then, elder son Sunil doesn't cooperate and often argues and fights with her when she asks him to work and share the family responsibilities. So, he has also become a liability.

The family belongs to the Bhargav community, whose traditional source of earning livelihood is to seek alms, food grains, and oil from people on Saturdays. However, due to ill health, neither Geeta Kumari nor her husband is able to carry out this traditional work. The two sons too do not like this traditional work custom and feel ashamed to seek alms from people. So, currently, the income from this traditional activity is nil. Then, due to ill health for the past two years, Geeta Kumari is also not able to cultivate the family-owned unirrigated six Bighas of land which earlier was a major activity that contributed to the family income. All these circumstances have weakened the financial position of the family, making it a daunting task for Geeta Kumari to run the household. She looks sad and says that while she was in a financially sound position, she always helped people who came to her. However, now no one is reciprocating her kind acts. The family also owns livestock, but there is no revenue generated from them.

Worst of all is that though the family falls under the BPL family category, none of the members except Hariram enjoy the benefits. The reason- the BPL card has photo only of Hariram and no other family member.

Younger son Anil is the silver lining in the family. Realizing the problems and poor financial condition of the family, he started working in a furniture workshop eight months ago in Jaipur.

* Names changed to protect identity

ARAVALI AGA KHAN FOUNDATION
Supported by the Aga Khan Foundation through the European Union funded SCALE Programme

धुँधलाते हाशिए ...

अंक : 6 दिसम्बर 2011

अरावली : एक परिचय

अरावली (एसोसिएशन फॉर रूरल एडवांसमेंट थ्रू वॉलेण्टरी एक्शन एण्ड लोकल इन्वोलमेण्ट), राजस्थान सरकार द्वारा शुरु किया गया एक स्वायत्तशासी संगठन है। हमारा यह मानना है कि समाज में होने वाले विकास एवं प्रगति का लाभ समाज के प्रत्येक वर्ग, विशेषकर समाज के सबसे गरीब व कमजोर वर्ग, तक पहुँचना ही चाहिए। इसी दिशा में काम करते हुए हमने गत दो वर्षों में अपने सहयोगी गैर सरकारी संगठनों के साथ मिलकर नई रणनीति तथा ऐसी प्रणाली विकसित की जो न केवल गरीब व कमजोर वर्ग के लोगों की मदद करते हैं बल्कि साथ ही ऐसे प्रावधानों / कार्यों का भी विरोध करते हैं जो इस वर्ग के हितों के विरुद्ध हैं।

परिवार आजीविका संदर्भ केन्द्र (FLRC) इसी दिशा में एक अनूठा प्रयास है। यह केन्द्र न सिर्फ चिन्हित परिवारों की आजीविका से संबंधित मुद्दों का गतिशील एवं व्यवस्थित रूप से आंकलन करने के लिए एक नवीन दृष्टिकोण है, बल्कि साथ ही, यह समाज के आम लोगों को भी इस बात के लिए प्रोत्साहित करता है कि वे स्थाई उपायों द्वारा समाज के सबसे गरीब व कमजोर व्यक्ति को भी गरीबी के जाल से मुक्त करवाएँ।

'धुँधलाते हाशिए...' शीर्षक वाली यह श्रृंखला हमारे उन प्रयासों का एक हिस्सा है जो हम राज्य के निर्धनतम व कमजोर वर्ग के व्यक्तियों के जीवन और उनके विकास एवं उन्नति के लिए राज्य सरकार तथा विकास के अन्य भागीदारों का ध्यान आकर्षित करने के लिए कर रहे हैं।

अरावली
पटेल भवन
एच.सी.एम.–रीपा (ओटीएस)
जवाहरलाल नेहरू मार्ग,
जयपुर–302017
फोन : 0141–2710556,
2701941

ई–मेल :
aravali-rj@nic.in

वेबसाइट :
www.aravali.org.in

परिवार*

नागौर जिले में जॉयल ब्लॉक के चपड़ा गांव में रहने वाली 46 वर्षीय गीता कुमारी अपने पति हरीराम, दो बेटों –27 वर्षीय सुनील और 17 वर्षीय अनिल और सुनील की पत्नी के साथ रहती है। दो साल पहले हुए एक सड़क दुर्घटना ने हरीराम को शारीरिक व मानसिक रूप से कमजोर कर दिया है। आज परिवार के पोषण की जिम्मेदारी गीता कुमारी पर है और वो भी ऐसी स्थिति में जब वह स्वयं भी स्वस्थ नहीं है।

गीता अस्थमा से पीड़ित है और दो साल पहले डॉक्टर ने उसे बताया कि उसके दिल का वाल्व भी खराब है। गीता ने कुछ दिन तो जिला मुख्यालय स्थित सरकारी अस्पताल में इलाज करवाया, लेकिन बहुत महंगी दवाईयों और स्वास्थ्य में सुधार न होता देख उसने इलाज बन्द कर दिया और बेहतर स्वास्थ्य की कामना करते हुए गांव में स्थित एक धाम पर धोक लगाने लगी जिससे उसकी तबियत और भी बिगड़ गई। अब गीता कुमारी शारीरिक काम करने में असमर्थ है। उसकी समस्याएं यहीं खत्म नहीं होती। उसका बड़ा बेटा सुनील जिसे परिवार के पोषण में मदद करनी चाहिए भी उस पर एक बोझ बन गया है। वह गीता की बात नहीं मानता और जब वह उससे कमाने के लिए कहती है तो लड़ाई करता है। इसके ठीक विपरित गीता का छोटा बेटा अनिल अपनी जिम्मेदारियों को समझता है और परिवार के हालात को देखते हुए उसने 8 महीने पहले जयपुर में फर्नीचर के शोरूम पर काम करना शुरू कर दिया था।

गीता भार्गव जाति से है जिनका जीवनयापन के लिए परम्परागत काम गांव में लोगों से शनिवार के दिन अनाज, तेल व नकद मांगना होता है। लेकिन गीता और हरीराम के बीमार होने के कारण वह दोनों यह काम करने में असमर्थ हैं और उनके बेटों को यह काम करने में शर्म आती है इसलिए इस आय के स्त्रोत से परिवार को कोई आमदनी नहीं होती। खराब सेहत के कारण गीता अपनी 6 बिघा असींचित कृषि भूमि से भी कोई आय नहीं जुटा पा रही है। गीता पशुधन भी रखती है लेकिन उनसे आमदनी नहीं होती। इन हालातों में जब परिवार की आमदनी लगभग न के बराबर है गीता के लिए परिवार का पोषण एक गम्भीर समस्या बन गया है। वह बताती है कि खुशहाल दिनों में उसने कई लोगों की

* Names changed to protect identity

ARAVALI
AGA KHAN FOUNDATION
Supported by the Aga Khan Foundation through the European Union funded SCALE Programme

मदद की, लेकिन अब कोई भी उसकी मदद को तैयार नहीं है। हालांकि गीता का परिवार बी0 पी0 एल0 कैटेगरी में आता है, लेकिन कार्ड पर सिर्फ हरीराम का फोटो होने के कारण कोई भी अन्य सदस्य उसका लाभ लेने में असमर्थ है।

अब परिवार की सालाना आय 47,400 रूपये है (1,600 रूपये पशुधन बिक्री से, 4,800 रूपये हरीराम की वार्षिक विकलांग पैन्शन से, 10,000 रूपये सुनील की सालाना मजदूरी से, 22,000 रूपये अनिल की नौकरी से, व 9,000 रूपये नरेगा में मजदूरी से)। आमदनी की तुलना में परिवार का सालाना खर्च 16,260 रूपये ज्यादा अर्थात् 63,600 रूपये है। (36,000 रूपये बिमारी सम्बन्धित खर्च, 18,360 रूपये भोजन पर, 4,000 रूपये पीने के लिए पानी, 2,000 रूपये कपड़ों पर, 500 रूपये पलायन किराया, व 400 रूपये एक बकरी की चराई)। परिवार की आमदनी का 60 प्रतिशत बिमारियों के इलाज पर खर्च करने के बाद भी उनके स्वास्थ्य में कोई सुधार नहीं है।

आशा की किरण

गीता कुमारी का अगर मुख्यमंत्री जीवन रक्षा कोष से इलाज हो जाए तो वह फिर से काम करने योग्य हो जाएगी और परिवार की आर्थिक स्थिति बेहतर होगी। बड़े बेटे सुनील को अपनी जिम्मेदारियों के प्रति समझाए जाने की जरूरत है और उसे कौशल आधारित किसी प्रशिक्षण से जोड़ा जा सकता है। सुनील की पत्नी को भी आंगनवाड़ी की तरह के किसी काम में लगाया जा सकता है।

कृपया ध्यान देवें

12 गांव में 90 एफ.एल.आर.सी. परिवारों में से 26 ऐसे हैं जिनमें महिला बीमारी से ग्रसित है।

FHO के बारे में ...

उरमूल खेजड़ी संस्थान (UKS), नागौर उरमूल ट्रस्ट बीकानेर की एक शाखा संस्था है। उरमूल खेजड़ी संस्थान, 1998 में एक स्वतंत्र संस्था के रूप में रजिस्टर हुई। तब से यह संस्था नागौर जिले की 95 ग्राम पंचायतों में काम कर रही है। उरमूल खेजड़ी संस्थान गरीबों, मजदूरों और समाजिक व आर्थिक रूप से पिछड़े वर्ग के लोगों के जीवन को बेहतर बनाने के लिए प्रयासरत है। संस्था प्राथमिक स्तर तक शिक्षा की सुविधा, पलायन कर मजदूरी करने वाले लोगों की मदद, निर्धनतम वर्ग के परिवारों को विभिन्न सरकारी योजनाओं और कार्यक्रमों से जोड़ना, घुमंतू जाति (कालबेलिया, वनवासी आदि) के लोगों के अधिकारों और युवा वर्ग के लिए भिन्न प्रकार के कौशल आधारित कैम्प लगाना आदि मुद्दों पर मुख्य रूप से कार्य कर रही है। UKS परिवार आजीविका संदर्भ केन्द्र के अंतर्गत जायल ब्लाक के 13 चिन्हित गांवों में सबसे गरीब वर्ग की पहचान, आजीविका की समस्या, उनकी उम्मीदों व प्राथमिकताओं को समझकर उनके लिए जरूरी सहायता उपलब्ध करा रही है।

FLRC परिवारों को उपयुक्त सहायता प्रदान करने के लिए इनकी आजीविका के स्त्रोतों का विश्लेषण करके इन परिवारों को विभिन्न वर्ग विशेषों में बांटा गया है। यहां जिस परिवार की चर्चा की गई है उसका संबंध उस चिन्हित वर्ग विशेष से है जिसमें वे परिवार शामिल है जिनमें महिलायें बिमारियों से ग्रसित है।

उरमूल खेजड़ी संस्थान
ग्राम पोस्ट – झाड़ेली,जायल
जिला – नागौर–341022
फोन : 01583–278255
मो. : 9414864137

ई–मेल :
uks.rajasthan@gmail.com

ARAVALI
AGA KHAN FOUNDATION
Supported by the Aga Khan Foundation through the European Union funded SCALE Programme

About FHO Organisation:

One of the off- shoot organizations of Urmul Trust, Bikaner, Urmul Khejri Sansthan (UKS) registered itself in 1998 and has been working in 95 *Gram Panchayts* of Nagaur district. It has been striving to support laborer class and other socially and economically marginalized population in the area on issues like educational opportunities up to primary level, supporting migrant laborers both at the source and destination, benefiting marginalized families by linking them with various government schemes and programmes, rights of nomadic tribes (*kalbeliya, vanvasi, etc*), conducting skill-based training programmes for youths and engaging with ultra poor families of the 13 selected villages in order to understand their livelihood issues, their aspirations and priorities to plan need based interventions.

Urmul Khejri Sansthan
Village & Post - Jhareli, Jayal
District - Nagaur-341022
Phone : 01583-278255
Mob. : 9414864137

Email :
uks.rajasthan@gmail.com

The annual income of the family stands at about Rs 47,400. This includes Rs 1,600 from the sale of livestock, Rs 4,800 as the pension for physically-challenged Hariram, Rs 10,000 earned by Sunil as a daily wage labourer, Rs 22,000 earned by Anil from his work at furniture workshop and Rs 9,000 as the NREGS wages. Presently, there is no income from the six bighas of land owned by the family.

Food and medicine are the two major expenses of the family. On an average, Rs 36,000 are spent on the medicines of Geeta Kumari while on food the family spends about Rs 18,360. Other expenditure is on clothes (Rs 2,000), livestock feed (Rs 2,400), goat grazing rent (Rs 400), and drinking water (Rs 4,000). The total annual expenditure of the family amounts to Rs 63,600, leaving it with a huge deficit of Rs 16,260. The family balance sheet clearly shows that about 60 percent of the expenditure is on medical treatment. And this too hasn't helped, as there is no improvement in the health.

Rays of hope

If **Geeta Kumari** can be provided proper medical assistance and treatment with funds from the Chief Minister's Life Saving Fund, she can start working again which will improve the financial condition of the family. Counseling Sunil about his responsibilities towards the family and training him in some better revenue generating life skills will also help the family. Sunil's wife studied up to class VI and can be engaged in some Aanganwadi activities.

PS:

26 out of the 90 FLRC families in 12 villages are such where the family income is dependent on women and has been affected due to them suffering from some illness.

ARAVALI

AGA KHAN FOUNDATION

Supported by the Aga Khan Foundation through the European Union funded SCALE Programme